Krishna Mahila T. T. College

BOOKLET

ON

NATIONAL SEMINAR

"Class-room Teaching is Insufficient Experience in Teacher Education for the Growth of Taxonomy of Educational Skills"

7th - 8th September, 2018
(Friday, Saturday)

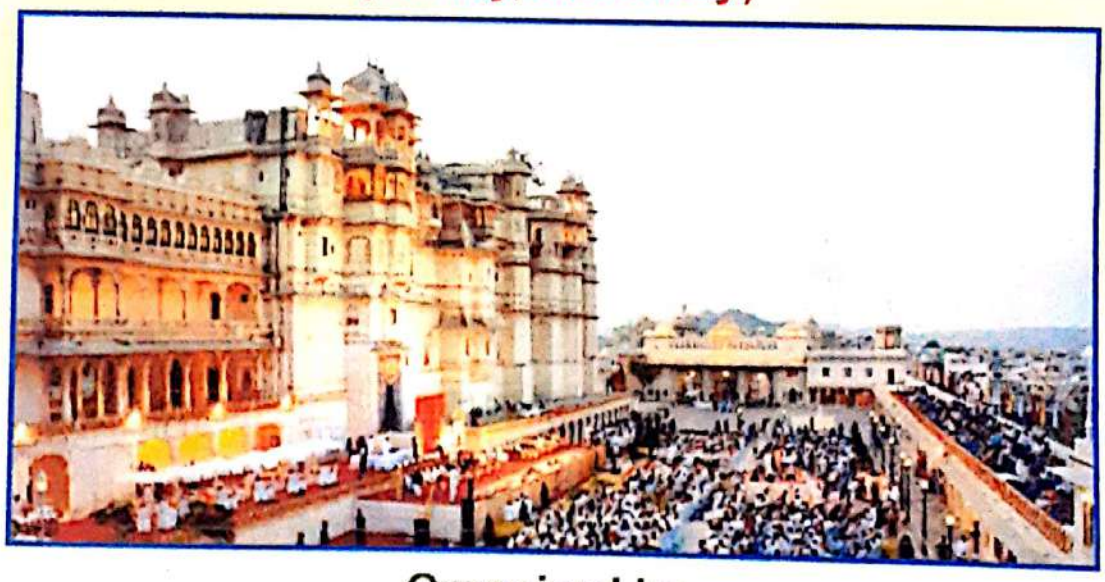

Organized by

Krishna Mahila T. T. College

Sisarma, Udaipur

in collaboration with

Faculty of Education

Mohanlal Sukhadia University, Udaipur

Sponsored by

I.C.S.S.R.

जीवन कौशल विकास एवं अध्यापक शिक्षा

डॉ. गिरिराज भोजक[1]

अध्यापक शिक्षा वह आयाम है जो किसी भी देश के संतुलित, गुणवत्तापरक एवं उत्पादक मानव संसाधन विकास की प्रमुख आधारशिला है। अध्यापक शिक्षा, देश की नींव निर्माण से जुड़े अध्यापकों को पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ संरचित, विकसित एवं नवनिर्माण की दिशा में प्रगतिशील कार्य करने वाली अति महत्त्वपूर्ण संस्था के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन करती है।

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है मानव का संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक विकास करना। हमारे देश में अध्यापक शिक्षा का अधिकतम क्षेत्र विद्यालयी शिक्षा से जुड़ा है जहाँ मुख्यतः एक बालक की बाल्यावस्था से पूर्व युवावस्था तक की शिक्षा का महनीय कार्य संपादित किया जाता है। एक विद्यालय बालक को इस प्रकार प्रशिक्षित करता है कि वह पाठ्यचर्या से सम्बन्धित परीक्षा के साथ–साथ आगामी जीवन को उन्नत, प्रगतिशील एवं उत्पादक बनाकर देश के समग्र विकास में भागीदार बन सके। भागीदार शब्द एक प्रकार से प्रत्येक विद्यार्थी से इस प्रकार सम्बन्धित है जैसे एक प्राइवेट कम्पनी के सभी नफा–नुकसान से उसके सभी भागीदार (Partner) या शेयर–होल्डर्स (Shareholders) धनात्मक या ऋणात्मक रूप से प्रभावित होते हैं। प्रकार्यवाद (Functionalism) की विचारधारा यह प्रश्न करती है कि शिक्षा ने समाज को क्या दिया? शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन एवं गतिशीलता की गुणात्मक दर क्या है? वर्तमान परिदृश्य में विद्यार्थी को 'स्वविकास' तक सीमित एवं स्वार्थी होकर शिक्षा ग्रहण करने के स्थान पर अपने क्षेत्र को विस्तारित कर समुदाय, समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्र के सरोकार से जोड़ने की मांग बलवती हो रही है।

व्यक्ति के सामाजिक, नैतिक एवं चारित्रिक विकास का प्रमुख आधार है जीवन कौशल शिक्षा जो कि विद्यार्थी को जीवन जीने की कला सिखाये, उसके व्यक्तित्व का संतुलित एवं गुणवत्तापूर्ण विकास करके उसे एक आदर्श नागरिक के रूप में विकसित करें।'

विश्व स्वास्थ्य संगठन (1997) के अनुसार, "किसी भी व्यक्ति का वह अनुकूलित एवं सकारात्मक व्यवहार जो उसे दैनिक जीवन की माँगों एवं चुनौतियों को प्रभावशाली रूप से सामना करने योग्य बनाये ऐसी कुशलताओं के योग को जीवन कौशल कहा जाता है।"

यूनिसेफ (UNICEF) 2001 के अनुसार, "जीवन कौशल आधारित शिक्षा वह है जो कि व्यवहारगत परिवर्तन अथवा व्यावहारिक विकास उपागम के माध्यम से व्यक्तित्व के तीन पक्षों में संतुलन हेतु कार्य करे, ज्ञान, अभिवृत्ति एवं कौशल।"[2]

जीवन कौशल आधारित शिक्षा की आवश्यकता

अध्यापक शिक्षा से जुड़े सभी प्रशिक्षणार्थियों को भावी जीवन में एक शिक्षक के रूप में विद्यार्थियों से जुड़ी विभिन्न आवश्यकताओं, कठिनाइयों एवं उद्देश्यों से सामना करना होता है। इस उद्देश्यानुसार जब व्यक्ति स्वयं अपने स्तर पर संवेगों का उचित प्रबन्धन कर पायेगा तभी वह अन्य व्यक्तियों की व्यवहारगत समस्याओं को ना केवल गहराई से समझ पायेगा बल्कि उनका कुशलतापूर्वक समाधान भी कर पायेगा। प्रत्येक शिक्षक हेतु युवाओं के विविध पक्षों के सम्बन्ध में जीवन कौशल शिक्षा की अनिवार्यता है जो कि निम्नलिखित है–

अ. व्यक्ति की विकासात्मक आवश्यकताएँ एवं आकांक्षाएँ

ब. मनोवैज्ञानिक क्षमताओं का विकास

---

1. सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं
E-mail: drbhojakgiriraj@gmail.com

2. Carneiro, Crawford and Goodman, The Impact of Early Cognitive and Non- Cognitive Skills on Later Outcomes (2007)